टिप्पणी

214hi14

14

मुद्रा और उसकी भूमिका

'मुद्रा' शब्द काफी रुचि उत्पन्न करता है। आज के व्यस्त जीवन में मुद्रा ने एक महत्वपूर्ण भूमिका प्राप्त कर ली है। अपनी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए, बहुत सी वस्तुओं का क्रय करने के लिए हमें मुद्रा की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार, हमें बहुत सी सेवाएं जैसे परिवहन, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, होम डिलीवरी और ऐसी बहुत सी सेवाएं प्राप्त करने के लिए भी मुद्रा की आवश्यकता होती है। क्रेता के रूप में हम वस्तुओं और सेवाओं का क्रय करने के लिए मुद्रा का भुगतान करते हैं और एक विक्रेता के रूप में हम उन्हें बेचकर मुद्रा प्राप्त करते हैं। सामान्य रूप से, हम मुद्रा कागज के नोटों और सिक्कों के रूप में भुगतान/प्राप्त करते हैं। किन्तु क्या आप जानते हैं कि प्राचीन काल में लोग वस्तु से वस्तु का विनिमय करते थे। यह वस्तु विनिमय प्रणाली कही जाती थी। समय के साथ वस्तु विनिमय प्रणाली का स्थान मुद्रा ने ले लिया। क्यों? इन सब को जानने के लिए इस पाठ का अध्ययन कीजिये।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- वस्तु विनिमय प्रणाली का अर्थ;
- समाज के द्वारा मुद्रा की आवश्यकता;
- मुद्रा के कार्यों की व्याख्या;
- मुद्रा के प्रकारों के रूप में कागजी मुद्रा और सिक्के।

14.1 वस्तु विनिमय प्रणाली

प्राचीनकाल में जब लोग छोटी-छोटी संस्थाओं में रहते थे और अधिक विकास नहीं हुआ था, जैसा कि आप आज देखते हैं, वे एक दूसरे की सहायता, वस्तु विनिमय प्रणाली से परस्पर एक दूसरे को लाभ पहुँचा कर करते थे। वस्तु विनिमय प्रणाली का क्या अर्थ है? वस्तु विनिमय प्रणाली से अभिप्राय एक प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय दूसरी प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं

से करने से है। वस्तु विनिमय प्रणाली में मुद्रा का कोई योगदान नहीं था। **जब एक वस्तु का बिना मुद्रा के प्रयोग के, दूसरी वस्तु के साथ विनिमय किया जाता है तो हम उसे वस्तु विनिमय प्रणाली द्वारा व्यापार कहते है।** प्राचीन सभ्यता में ऐसा होता था।

वस्तु विनिमय प्रणाली के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

(अ) प्राचीन काल में, यूरोप से व्यापरी वस्तुओं जैसे फर और शिल्प का विनिमय इत्र और रेशम के बदले, संसार के पूर्वी भागों से किया करते थे।

(ब) भारत में बहुत से जनजाति समाजों में परिवार भोजन तथा अन्य श्रमिक सेवाओं से श्रमिक सेवाओं का विनिमय किया करते थे। उदाहरण के लिए, यदि एक परिवार को फसल काटने के लिए श्रमिकों की आवश्यकता है तो दूसरा परिवार सेवा प्रदान करने के लिए इस वादे के साथ आता था कि वह बदले में इसी प्रकार की सहायता फसल काटने के लिए या घर की छत डालने के लिए प्राप्त करेगा। इस प्रकार की रीति, भारत के दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों में आज भी प्रचलित है।

(स) विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में लोग जैसे किसान, शिल्पकार, मोची, बढ़ई आदि अपने उत्पाद और सेवाओं का आपस में विनिमय किया करते थे।

पाठगत प्रश्न 14.1

1. वस्तु विनिमय प्रणाली की परिभाषा दीजिए।
2. वस्तु विनिमय प्रणाली के दो उदाहरण दीजिए।

14.2 मुद्रा की आवश्यकता

वस्तु विनिमय प्रणाली जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है, अब प्रचलित नहीं है। आज की दुनिया में कोई एक वस्तु का विनिमय दूसरी वस्तु के साथ नहीं करता है। प्रत्येक व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं का क्रय करने के लिए मुद्रा का भुगतान करता है। इसलिए, प्रश्न उठता है, अब वस्तु विनिमय प्रणाली क्यों प्रचलित नहीं है? मुद्रा की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हुई? इन सभी प्रश्नों के उत्तर इस वास्तविकता में हैं कि वस्तु विनिमय प्रणाली में अनेक दोष हैं जिनका वर्णन नीचे किया गया है।

14.2.1 वस्तु विनिमय प्रणाली के दोष

वस्तु विनिमय प्रणाली के दोष निम्न हैं :

1. वस्तु विनिमय प्रणाली की एक सामान्य समस्या, **आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी** है। इससे क्या अभिप्राय है? आवश्यकताओं के दोहरे संयोग से अभिप्राय है कि यदि कोई अपनी वस्तु दूसरे व्यक्ति से विनिमय करना चाहता है तो दूसरा व्यक्ति भी पहले व्यक्ति से अपनी वस्तु का विनिमय करने के लिए इच्छुक होना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति

टिप्पणी

को कपड़ा चाहिए और उसके पास बदले में देने के लिए चावल हैं। तब वह चावल के बदले में दूसरे व्यक्ति से कपड़ा प्राप्त कर सकता है, जिसके पास कपड़ा है और उसे चावल की आवश्यकता भी है। व्यवहारिक जीवन में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो भी सकती है और नहीं भी। यदि व्यक्ति जिसके पास कपड़ा है उसे चावल की आवश्यकता नहीं है, तो चावल का कपड़े के लिए विनिमय नहीं होगा और दोनों व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं कर सकते। यह आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी का एक उदाहरण है। इसलिए वस्तु विनिमय प्रणाली तभी कार्य करेगी जबकि आवश्यकताओं का दोहरा संयोग हो, अन्यथा यह कार्य नहीं करेगी।

वस्तु विनिमय प्रणाली की एक सम्बन्धित समस्या यह है कि ऐसे व्यक्ति को ढूँढने में बहुत समय लगता था जो विनिमय करने के लिए तैयार था। किन्तु, मानवीय सभ्यता के प्रारम्भिक काल में यह एक बहुत ही कठिन कार्य था क्योंकि परिवहन और सम्प्रेषण की उचित सुविधा नहीं थी।

2. वस्तुओं के विभाजन की कमी : **कुछ वस्तुएं भौतिक रूप से, छोटे टुकड़ों में विभाजित नहीं की जा सकतीं।** मान लो, एक व्यक्ति के पास एक गाय है और उसे वस्तुओं जैसे कपड़ा अनाज आदि की आवश्यकता है। तब कितनी गाय कपड़े के बदले में और कितनी गाय खाद्यान्नों के बदले में दी जा सकती हैं? इसका निर्धारण करना बहुत कठिन था क्योंकि गाय को अनेक भागों में नहीं बांटा जा सकता।

3. वस्तुओं के विभाजन की कमी के कारण, वस्तु विनिमय प्रणाली में जिन विभिन्न वस्तुओं का व्यापार किया जाता था उनके मूल्यों की बराबरी करना बहुत कठिन था क्योंकि **माप की सामान्य इकाई नहीं थी।**

   उपर्युक्त उदाहरण में, यह तय करना बहुत कठिन होगा कि गाय की कितनी मात्रा, खाद्यान्न की एक विशिष्ट मात्रा के लिए या कुछ गज कपड़े के लिए दी जाय। यह बेतुका भी प्रतीत होता है। यह इसलिए होता है कि एक गाय कभी भी मूल्य का सामान्य माप नहीं हो सकती। यह समस्या अन्य सभी वस्तुओं के विषय में भी समान ही है।

4. वस्तु विनिमय प्रणाली की एक और समस्या यह है कि **एक व्यक्ति को अपनी वस्तु की बहुत बड़ी मात्रा का भंडारण करना पड़ता है** जिससे कि दैनिक आधार पर दूसरों के साथ अपनी इच्छित वस्तुओं का विनिमय किया जा सके। एक किसान का उदाहरण लो जिसने गेहूँ का उत्पादन किया है। स्पष्ट है कि गेहूँ की कुछ मात्रा वह अपने उपयोग के लिए प्रयोग करेगा और कुछ मात्रा दूसरों से अन्य आवश्यक वस्तुओं का विनिमय करने के लिए रखेगा। यदि उसे फर्नीचर की आवश्यकता है तो वह एक बढ़ई के पास जायेगा जो गेहूँ के बदले में फर्नीचर देने का इच्छुक है। इसी प्रकार, यदि उसे कपड़े की आवश्यकता है तो उसे एक जुलाहे से विनिमय करना पड़ेगा जो कि गेहूँ प्राप्त करके कपड़ा देने को तैयार है। और इसी प्रकार। इसलिए, एक किसान को अपनी इच्छित वस्तुओं का विनिमय करने के लिए अपने गेहूँ का स्टॉक करने के लिए पहले एक भण्डार गृह का निर्माण करना पड़ेगा। किन्तु एक भंडार गृह का निर्माण और रखरखाव, सभ्यता के आरम्भिक काल में एक बहुत ही कठिन कार्य था।

5. अन्त में, वस्तु विनिमय प्रणाली की एक बड़ी समस्या यह है कि किसी वस्तु की वास्तविक गुणवत्ता और मूल्य में कमी हो जाती है, यदि इसका भंडारण एक लम्बी अवधि के लिए किया जाता है। कुछ वस्तुएं जैसे नमक, सब्जियाँ आदि नाशवान हैं। इसलिए वस्तुएं भविष्य में व्यापार के लिए कभी स्वीकार नहीं की जाती क्योंकि **उनका प्रयोग क्रय शक्ति के संचय के लिए नहीं किया जा सकता।** इसका यह भी तात्पर्य है कि कोई वस्तु उधार देने या लेने के उद्देश्य से प्रयोग नहीं की जा सकती।

ऊपर दी गई समस्याओं के कारण वस्तु विनिमय प्रणाली अधिक समय तक नहीं चल सकी। जैसे ही मानव सभ्यता का विकास हुआ तो लोगों ने महसूस किया कि विनिमय का कोई माध्यम होना चाहिए जिसे आसानी से ले जाया जा सके, संग्रहण किया जा सके और वस्तुओं के मूल्य की अभिव्यक्ति कर सके। इसलिए मुद्रा अस्तित्व में आई। इसलिए वस्तु विनिमय प्रणाली के असफल होने के कारण मुद्रा की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

पाठगत प्रश्न 14.2

1. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की परिभाषा दीजिए।
2. वस्तु विनिमय प्रणाली से जुड़ी दो कठिनाइयाँ बताओ।

14.3 मुद्रा की परिभाषा और कार्य

मुद्रा को उस वस्तु के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसे विनिमय के माध्यम के रूप में समाज द्वारा सामान्य रूप से स्वीकार किया जाय, जो लेखे की इकाई के रूप में कार्य कर सकती है, क्रय शक्ति का संचय कर सकती है और जिसे ऋण चुकाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

मुद्रा के कार्यों का इसकी परिभाषा से पता चलता है। ये नीचे दिए गए हैं।

1. **विनिमय का माध्यम:** मुद्रा का प्राथमिक कार्य यह है कि यह विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। इसका तात्पर्य यह है कि लोग मुद्रा की सहायता से वस्तुएं और सेवाओं का क्रय-विक्रय कर सकते हैं। वस्तु के विक्रेता द्वारा मुद्रा प्राप्त की जाती है तथा वस्तु के क्रेता द्वारा मुद्रा का भुगतान किया जाता है।

   उदाहरण: आप एक पैन खरीदने के लिए 10 रु. का भुगतान करते हैं। विक्रेता आपसे पैन बेचकर 10 रु. प्राप्त करता है। इस प्रकार एक पैन का 10 रु. के लिए विनिमय किया जाता है।

2. **मूल्य का मापन:** मुद्रा का दूसरा मौलिक कार्य यह है कि यह लेखे की इकाई अथवा मूल्य के सामान्य माप के रूप में कार्य करती है। किसी वस्तु का मूल्य, इसकी कीमत को बाजार में बेची गई मात्रा से गुणा करके ज्ञात किया जाता है। क्योंकि कीमत मौद्रिक इकाई के रूप में व्यक्त की जाती है, किसी वस्तु के मूल्य को मुद्रा के रूप में भी व्यक्त किया जाता है।

टिप्पणी

उदाहरण : मान लो चावल की कीमत 20 रु. प्रति कि.ग्रा. है। चावल से भरे एक बोरे का भार 25 कि.ग्रा. है तो चावल के बोरे का मूल्य रु. $20 \times 25 = 500$ रु.।

3. **क्रय शक्ति का संचयः** मुद्रा क्रय शक्ति के संचय का कार्य भी करती है। कैसे? विनिमय के माध्यम के रूप में आप वस्तुएं खरीदने के लिए मुद्रा का भुगतान कर सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि यदि आपके पास मुद्रा है तो आपके पास किसी वस्तु या सेवा को खरीदने की शक्ति है। इसलिए मुद्रा में क्रय शक्ति होती है। वस्तु का मूल्य उस क्रय शक्ति में समाविष्ट होता है। इसलिए किसी वस्तु का मूल्य अप्रत्यक्ष रूप से आप के पास मुद्रा के रूप में संचय किया जाता है। इसी प्रकार, वस्तु के एक विक्रेता के रूप में आप मुद्रा प्राप्त करते हैं जिसका अर्थ यह है कि वस्तु का मूल्य, जो आपने बेची, आपके पास मुद्रा के रूप में वापस आ जाता है।

उदाहरण : सुशीला के पास कुछ आम हैं जिन्हें वह एक क्रेता को 250 रु. में बेचती है। इसका अर्थ है कि 250 रु. के मूल्य का विनिमय हुआ। क्रेता, जिसने आम खरीदे, उसके पास देने के लिए 250 रु. मूल्य की क्रय शक्ति है। इसलिए, सुशीला द्वारा विक्रेता के रूप में प्राप्त, 250 रु. के मूल्य का मुद्रा के रूप में संचय किया गया। सुशीला, आमों का संचय नहीं कर सकती थी किन्तु वह निश्चित रूप से मुद्रा का संचय कर सकती है। उसने 250 रु. मूल्य का संचय किया है।

4. **भविष्य में भुगतान करनाः** हम सब उधार देने और उधार लेने की गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। मान लो, आपका मित्र आपसे एक पुस्तक खरीदने के लिए 300 रु. मांगता है क्योंकि उसके पास इस समय मुद्रा नहीं है। वह एक सप्ताह बाद मुद्रा वापस करने का वचन देता है। यदि आप इससे सहमत हैं और वास्तव में उसे मुद्रा दे देते हैं तो आप ऋणदाता कहलाएगें और आपका मित्र ऋणी कहलाएगा। एक ऋणदाता के रूप में, आपने जो मुद्रा अपने मित्र को उधार दी है, उस पर कुछ ब्याज भी ले सकते हो। यदि आप कोई ब्याज नहीं लेते तो आपका मित्र आपको एक सप्ताह के पश्चात 300 रु. का भुगतान करेगा। यदि आप ब्याज के रूप में 1 रु. वसूल करते हो तो आपके मित्र को एक सप्ताह के पश्चात् 301 रु. देने होंगे। आपके मित्र के समान, ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जो कि अपनी वर्तमान आवश्यकताओं की सन्तुष्टि करने के लिए आज मुद्रा उधार लेते हैं, इस शर्त पर कि वे ब्याज सहित ऋणदाता की सहमति के अनुसार, किसी भविष्य की तिथि पर भुगतान कर देंगे। भविष्य में यह भुगतान केवल मुद्रा के रूप में स्वीकार किया जाता है। हम यह भी कह सकते हैं कि ऋणी ने कुछ शर्त पर भुगतान को भविष्य के लिए स्थगित कर दिया है। इस मुद्रा ने भावी भुगतान के मानक के रूप में काम किया है। कुछ देर के लिए विचार कीजिये कि आपका मित्र 300 रु. या 301 रु. की बजाय वह पुस्तक देता है जो उसने खरीदी थी। तब, क्या आप उसे स्वीकार करोगे? सम्भव है, नहीं। क्योंकि एक सप्ताह पश्चात् पुस्तक की कुछ कीमत कम हो गई हो क्योंकि वह वही नई पुस्तक नहीं रही। किन्तु मुद्रा हमेशा भविष्य की किसी भी तिथि पर अवश्य स्वीकार की जायेगी क्योंकि इसने मूल्य का संचय किया है।

पाठगत प्रश्न 14.3

1. विनिमय के माध्यम की परिभाष दीजिए।
2. वस्तु के मूल्य का अर्थ बताओ।

14.4 मुद्रा के प्रकार

14.4.1 कागजी मुद्रा और सिक्के

मुद्रा कैसी दिखाई देती है? मुद्रा का आकार क्या है? समय के अनुसार मुद्रा का आकार बदल गया है। आपने इतिहास में पढ़ा होगा कि राजाओं के समय में लोग सोने के सिक्कों, चांदी के सिक्कों और तांबे आदि के सिक्कों का प्रयोग करके व्यापार किया करते थे। उससे पहले, प्राचीन काल में कुछ स्थानों पर लोग, पशु, नमक आदि के रूप में मुद्रा रखते थे।

आजकल, कोई भी वस्तु और सेवाओं को खरीदने के लिए पशु या नमक नहीं रखता। पशु रखना व्यवहारिक नहीं है क्योंकि इसके लिए बड़े स्थान और विशेष पर्यावरण की आवश्यकता है। नमक नाशवान है और इसे विनिमय के लिए, लम्बे समय तक संग्रह नहीं किया जा सकता। इसलिए, शताब्दियों तक बहुत से प्रयोगों के पश्चात्, अब लोग कागज के नोटों और सिक्कों के रूप में मुद्रा रखते हैं जिन्हें ले जाना आसान है। भारत में कागज के नोट 1, 2, 5, 10, 20, 50, 100, 500 और 1000 रु. के अंकित मूल्य में होते हैं। सामान्य रूप से ये करेन्सी नोट कहलाते हैं अैर इन्हें रुपये का नाम दिया जाता है। रु. का चिन्ह ₹ है।

मुद्रा का भुगतान क्रेताओं द्वारा किया जाता है अथवा विक्रेताओं के द्वारा करेन्सी नोट के रूप में प्राप्त किया जाता है। छोटे अंकित मूल्य के लिए सिक्के होते हैं। इन्हें पैसे कहते हैं। जैसे 50 पैसा, जहाँ 50 पैसा एक रुपया के आधे के बराबर है। अब 10 रु. अंकित मूल्य तक के सिक्के भारत में प्रचलन में हैं।

आपको जानना चाहिए कि करेन्सी नोट और सिक्के जो प्रचलन में है, उनकी भारत सरकार द्वारा जमानत दी जाती है। अन्यथा कोई भी व्यक्ति उन्हें बना सकता है और उनका दुरूपयोग कर सकता है।

याद रखें कि भारत के करेन्सी नोट और सिक्के भारत में ही वैध हैं, दूसरे देशों में नहीं। प्रत्येक देश की अपनी करेन्सी होती है। यदि आप दूसरे देशों में जाते हैं तो भारत की करेन्सी उस देश की करेन्सी में बदलनी पड़ेगी जिसमें आप जा रहे हैं। संसार के कुछ देशों की करेन्सी के नाम नीचे दिए गए हैं।

(अ) यू.एस.ए. की करेन्सी डालर कहलाती है जिसका चिन्ह $ है।

(ब) यूरोप की करेन्सी यूरो कहलाती है जिसका चिन्ह € है।

(स) संयुक्त राज्य की करेन्सी पौण्ड कहलाती है जिसका चिन्ह £ है।

(द) जापान की करेन्सी येन कहलाती है जिसका चिन्ह ¥ है।

पाठगत प्रश्न 14.4

1. करेन्सी नोट का अर्थ बताओ।

आओ कुछ करें

फ्रांस, जर्मनी, चीन और ब्राजील की करेन्सी का नाम देते हुए एक सूची तैयार करो।

आपने क्या सीखा

- मुद्रा के आविष्कार से पहले लोग वस्तुओं का वस्तुओं से विनिमय किया करते थे जिसे वस्तु विनिमय प्रणाली कहा जाता था।
- वस्तु विनिमय प्रणाली की बहुत सी समस्याएं थीं जैसे मुद्रा के समान माप का अभाव, आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी, वस्तुओं का संग्रहण करने के लिए स्थान की कमी जिससे उनका दूसरी वस्तुओं से विनिमय किया जा सके। इसने मानव समाज को मुद्रा की खोज करने के लिए प्रेरित किया।
- मुद्रा के कार्यों में विनिमय का माध्यम, मूल्य का मापन, क्रय शक्ति संचय सम्मिलित हैं और इसका प्रयोग भावी भुगतान के लिए किया जाता है। मुद्रा का विनिमय कागजी करेन्सी नोट और सिक्कों के रूप में किया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. वस्तु विनिमय प्रणाली की कार्य प्रणाली की व्याख्या करो।
2. वस्तु विनिमय प्रणाली के मुख्य दोष क्या है?
3. मुद्रा की परिभाषा दीजिए और इसके किन्हीं तीन कार्यों का उल्लेख कीजिए।
4. भारत में करेन्सी नोटों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 14.1

1. वस्तु का वस्तु से विनिमय वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाती है।
2. (i) 10 कि.ग्रा. गेहूँ 5 कि.ग्रा. चीनी के लिए
   (ii) 1 जोड़ी जूते के लिये 8 कि.ग्रा. चावल

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 14.2

1. दो व्यक्तियों में वस्तुओं का आपस में विनिमय
2. (i) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी (ii) मूल्य के संचय की कमी

पाठगत प्रश्न 14.3

1. कोई वस्तु जिसे वस्तुओं और सेवाओं के क्रय विक्रय के लिए सामान्यतयाः स्वीकार किया जाता है।
2. वस्तु का मूल्य = वस्तु की कीमत × वस्तु की मात्रा

पाठगत प्रश्न 14.4

1. करेन्सी नोट मुद्रा का एक प्रकार है।